भारत समस्यायें और मैं

भारत की सबसे बडी समस्या यह है कि जैसे भारत मे लोगो के दो नाम होते है वैसे ही इसके भी दो नाम है । एक घर वाला नाम है भारत , दूसरा बाहर वालो का दिया गया नाम है - इंडिया ।

सच मानिये मै यहाँ पर समस्याओ को गिनवाकर तारो की सख्या छोटी लगने लगे, ऐसा नही करना चाहता हूँ,न ही इस लेख का यह मन्तव्य है कि आप समस्याओ के बोझ तले निरुउत्साहित हो जाय या पढकर बोर हो जाये ।

अगर हमारे ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता भारत के बारे मे भविष्यवाणी करे भी तो कौन सी राशी से गणना करे ? निसन्देह ऐसी भविष्यवाणी सत्य भी हो सकती है, और गलत भी क्योकि आधीयो का सम्बन्ध भारत से होगा व शेष आधी इन्डिया से जुडी हुई है । क्यो न सबिधान मे संशोधन करके भारत नाम को चुन लिया जाय जो कि धर्म व जाति निरपेक्ष तथा अर्थपूर्ण भी है जिसक मतलब भरण करने वाला और ऐतिहासिक भी । फिर भगवान के लिये भी भारत का भाग्य लिखना आसान हो जाएगा ।

मै स्वयं भारत से जुडा हुआ हूँ और समास्याएं भारत से जुड़ी हुई है। इसलिये मै अपने को समस्याओ से जुड़ा हुआ मानता हूँ । जब मेरा और भारत मे सम्बन्ध स्थापित हो ही गया है तो जैसे लोग अपने सम्बन्धियो के बारे मे चिन्तित रहते है और उनकी तरक्की के बारे मे सोचते है, कुछ कुछ उसी तरह मेरा भी फर्ज हो जाता है कि मै भारत के बारे मे सोचने के बाद कुछ सा करु ताकि वह उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाएं । अगर हमे भारत की उन्नति की चाह है तो हम उन्नतिशील विचार भारत को दे जिससे वहमे उन्नति दले मे देगा । भारत की सबसे बडी समस्याओ की जड भारत की जनसंख्या है । ऐसा लोग मानते है मै नही मानता हूँ जितने जन है उतने ही मस्तिष्क और उससे दुगने हाथ है, इन समस्याओ को सुलझाने के लिये व दुगने पैर है एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिये और भारत को आगे ले जाने के लिए न कि उनसे घबराकर भागने के लिए । ज्रुरत यह है कि इस देश के हर जन को इतनी सामर्थ्य प्रदान की जाय कि वह इन समस्याओसे जूझने के लिये तैयार रहे । तब यह सब समस्याएं ही भाग खडी होगी ।

अगर मान लिया जाय कि एक परिवार मे छः या सात सदस्य लोग रहते है तो भारत मे कुल परिवारो की संख्या पन्द्रह करोड़ ही तो है जो कि समस्याओ बनेगे या सुलझाएंगे । तो हमे कभी भी सौ करोड़ की गिनती तक जाकर घवराहट का भागीनही बनना पड़ेगा । अब अगर हर परिवार का हर एक सदस्य एक समस्या पर ध्यान दे तो निशिचित रुप से एक समस्या पर एक से जयदा लोग होगे । उस तरह जन संख्या वोझ की जगह एक दूसरे का सहारा बन जायेगी ।

इसी तरह अगर हम गाँवो मे गरीबी, बाढ य सूखे की समस्या के समाधान का विशेषज्ञ सहकारी सन्स्थाको मानते है तो यह हमारी ससे डी भूल होगी । जैसे कि डाक्टरो के ज्यादा हनि से आम आदमी का स्वास्थ सुधरेगा ही, यह सच्चाई नही है । अतः हमे समास्याओ का मिलकर समाधान ढूढना है । स्वास्थ को बिगाड़े बाले तत्वो से समाज से दूर करके स्वास्थ सम्बन्धी सही शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना होगा, तभी जन सधारण स्वास्थ हो पायेगा ।

इस सन्दर्भ मे आपका ध्यान मै एक ज्वलन्त समस पर जरुर दिलाना चाहूंगा । हमारे देश की गन्दगी मे हमारे रेलवे प्रणाली का बहुत बड़ा हाथ है जो संसार की सबसे बड़ी जनसख्या को उधर से उधर ले जाती है प्रतिदिन । पर उनको पुरे देश मे गन्दगी फैलाने की छूट पता नहीं किसने दे दी । हमारे ही देश मे बेचारे चाट बेचने वाले को, जो अपने ग्राहको से आग्रह करना पड़ता है कि झूठे पत्ते इधर उधर न फैले तो टोकरी मे फेकें और आस पास की जगह को साफ रक्खें नही तो पुलिस उनका चालान करती है । पर उतना नफा कमाने वाली रलवे मे बैठिये चाहे जहाँ पैशा करिये या पखाना उस समय चाहे रेल नदी के उपर से जा रही हो या रेलवे के प्लेटफार्म पर हो, शहर या गाँव के बीच मे से जा रही हो, पटरी के किनारे मल मूत्र को फैलाने की, जो बीमारी व बदबू फैलाते है इसकी खुली छूट है । हवा का, पानी का, प्रदूषण फैलाना

भारतिये रेल का क्या जन्मसिध्द अधिकार मानती है और हमारे देश के प्रबुध्द नागरिक इस विषय मे चुप्पी साधे बैठे है । आवाहन है देश के स्वास्थ विभाग के कमर्ठ कार्यरत कर्मचारियो को कि वह इस स्मास्या की ओर ध्यान देऔर भरपूर प्रयास कर रेलवे को न्याय के कटघरे मे खड़ा कर दे और जनता व रेल कर्मचारियो के स्वास्थ की रक्षा करे, और रलवे को अपने हिस्से की गन्दगी समेटने को मजबूर करे । सिनेमाघर, होटल वाले पेशाब घर बनवाते है,यहाँ तक सड़क के किनारे वाले ढावे वाले तक, इससे सड़क के किनारे खड़े होकर पैशाब व पखाना करने वालो कि सख्या मे बहु हद तक कमी आई है । तो रेलवे भी यह काम जरुर कर सकती है चाहे सरचाज ही क्यो न लगाना पड़े ।

कोई भी समस्या इतनी विकट नही है न इतनी विस्तृत कि हल न की जा सके । आप बाहर के देशो मे जाय तो वहाँ रल या बस सेयात्रा कीहो तो आपको पता लेगा कि सिर्फ भारत या पढोसी देशो मे ही सड़कया रेलवे लाइन के किनारे गन्दगी मिलेगी कही और नही, बसो व रेल के डिब्बो मे फाईवर ज्लास के टैनक लगे रहते है रेल ब बसो किसमे भी पेशाब या पखाना करने का प्रबन्ध होता है । आप भारत के किसी एतिहासिक, धार्मिकव महत्वपूर्ण स्थान पर चले जाईये तो सफाई कर्मचारी हर समय पाखाना या पेशाब की सफाई से झूझते ही मिलेगे । क्योकि हम लोग अपने आप को इस काम के लिये उप्युक्त स्थान के विचार विना ही शुरु कर देते है । स्टेशन चाहे बस का हो या रेल का दुर्गन्धि से भरे मिलेगें और यदि आप बीमार नही है तो होते देर नही लगेगी ।

तो आये देखे की इस समास्या का हल क्या है । हर रेल के डिब्बे मे पानी का टैंक होता है सी तरह गन्दे मल मूत्र को इक्ठा करे का भी साधन होना चाहिये । जहाँ पर पानी भरे वही उसे निकलने की सेविधा भी हो । बसो मे जो दो घन्टे से अधिक की यात्रा करे उनमे भी शौचालय बनाने चाहिये एसी बसो ब रेल डिब्बो का विदेशो मे बहुत चलन है हम उनसे सीख सकते है क्या हम इतना छोधा काम खुद नही कर सकते है । सोचिये कितने लोगो को नया रोज़गार मिलेगा इन सबको करने के लिये ।

नये नये तरीको से सफाई की जा सकती है हो पानी पर न आधारित होकर हवा से भी यह काम हो सकता है । अगर सिर्फ रेलवे विभाग ही पानी की जगह हवा से सफाई करने लग जाय तो कितने नये उद्योग शुरु होगे और पानी की बचत होगी वह अलग और कीचढ भी नही बनेगी ।रेल व सफाई कर्मचारियो के स्वास्थ मे लाभ होगा । जब यह लेख मैने लिखा था उसी साल भारत स्वीडन से नये रेल के डिब्बे मगंबा रहा था हमने रेल विभाग के मंत्री को, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन को स्वयं पत्र लिखा था पर कोई जबाब नही आया हमे जबाब की जरुरत नही थी पर यह काम हो पाता तो हमे खुशी होती ।पर हम अब भी आशाबान है कि कभी तो हमारी रेल व बस सेवाओ मे सुधार होगा । हमार यह भी अनुरधि है इस लेख को पढने बालो से यदि आपकी पहुंच रेलवे मे किसी भी स्तर पर ता हमारी इस ईच्छा का प्रचार जरुर करें । अगर एक डिब्बे की कीनत अगर दस लाख रुपये है तो हम दस हजार रुपये संडास मे एक और टैंक लगाने मे सर्मथ है । इसी तरह हम बसो मे भी संडास बनाये तो जनता को सुविधा होगी और हमारे जन मानस का स्वास्थ की रक्षा हो पायेगी और सफाई भी अधिक होगी । यह एक बहुत महत्वपूर्ण कदम होगा और निवेश भी जनता के स्वास्थ के लिये ।

स्मस्या के लिये जागरूक होकर उन पर अलोचना करना एक महत्व पूर्ण बात है पर उनपर विचारशील होकर उनका समाधान सोचना एक और बडा काम होगा और हम यह करने मे सर्मथ है । आपके मन मे कभी तो कोई समाधान आता होगा तो मेरा आपसे यह अनुरोध है कि सम्बधित अधिकारी गण को जरुर एक पत्र डाल दे , अपने मित्रो को, रिस्तेदारो को, अपने नये नये विचारो से अवगत कराईये कुछ मिलकर करने की प्ररणा दीजिये । यदि यह सव करना आपका वस का नही तो आप भगवान से प्रअर्थना तो कर सकते है मेरे अपने भारत क, भविष्य मे उन्नति के लिये। तो कृपया भारत को आप जैसा देखना चाहते है वैसा सपना ही देखा करे, कहते है कभी तो सपने भी सच हो जाते है । विश्वास कीजिये सब कुछ सम्भव है, असम्भव कुछ नही होता है यदि हमारी चाहत मे वल है तो। सधन्यवाद रश्मि उमेश रोहतगी

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA Phone : (248) 471-5786
Web Page : www.rurohatgi.com Email : rurohatgi@yahoo.com